PAPER-I SOCIOLOGY (HONOURS) PART-I

E. STUDY MATARIAL FOR B.A. PART-I

BY-DR. RAMESH SINGH
G.D. COLLEGE, BAGAHA
Mob- 6394653523

Ques:- संस्कृति की परिभाषा दें। इसकी विशेषताओं की व्याख्या करें।

Ans:- निःसंदेह मानव इसलिए मानव है क्योंकि इसके पास संस्कृति है। संस्कृति के अभाव में मानव को पशु से भी श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। संस्कृति ही मानव की श्रेष्ठतम धरोहर है जिसकी सहायता से वह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है और प्रगति की ओर उन्मुख होता है। यदि मानव से इसकी संस्कृति छिन ली जाये तो मानव अन्य पशुओं के समान एक प्राणी मात्र ही रह जाएगा। मानव की संस्कृति केवल हमारी सामाजिक स्थिति, विचारों और विश्वासों को ही प्रभावित नहीं करती बल्कि भौगोलिक दशाओं के प्रभाव पर भी नियंत्रण लगाये रखती है। सच तो यह है कि वर्तमान युग में मनुष्यों ने अपने ज्ञान और बल-बुद्धि की सहायता से बड़े-बड़े अविष्कार किये हैं। प्रोद्योगिकी में विकास करके प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है तथा एक संगठित समाज का निर्माण करने के लिए विकसित परम्पराओं का निर्माण किया है। इसका तात्पर्य है कि मनुष्य एक विकसित संस्कृति का निर्माता है और यही संस्कृति उसके जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करती है। संस्कृति से किया गया अनुकूलन ही व्यक्ति की सभी सफलताओं का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का मानव जीवन में व्यापक महत्व है।

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा के संस्कार से बना है। संस्कार का अर्थ कुछ कृत्यों या अनुष्ठानों को सम्पन्न करना है। समाजशास्त्रीय अर्थ में संस्कृति को समाज की धरोहर या विरासत माना गया है। समाज द्वारा निर्मित भौतिक एवं अभौतिक दोनों पक्षों को संस्कृति में सम्मिलित करते हुए राबर्ट बीरस्टीड ने कहा है कि, "संस्कृति वह सम्पूर्ण जटिलता है जिसमें वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित है जिन पर हम विचार

करते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।"

पारसन्स ने अपनी पुस्तक 'The Social System' में संस्कृति को एक ऐसे पर्यावरण के रूप में परिभाषित किया है जो मानव क्रियाओं के निर्माण में मौलिक है। इसका तात्पर्य है कि संस्कृति मानव के व्यक्तित्व एवं क्रिया का निर्धारण करती है।

स्पष्टतः संस्कृति की कोई भी सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। संस्कृति शब्द इतना जटिल एवं विस्तृत है कि उसको एक सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन कार्य है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि, एक समाज विशेष के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमानों अथवा समग्र जीवन विधि को ही संस्कृति के नाम से पुकारा जा सकता है।

संस्कृति को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए हमें उसके तत्वों (प्रकृति) या विशेषताओं (लक्षणों) को समझना चाहिए। जो इस प्रकार है-

1. संस्कृति मानव निर्मित है :—

संस्कृति केवल मानव समाज में पायी जाती है। मनुष्य की कुछ ऐसी मानसिक एवं शारीरिक विशेषताएँ है जो उसे अन्य प्राणियों से भिन्न बनाती है और इसी कारण वह संस्कृति को निर्मित एवं विकसित कर सका है। अपने विकसित मस्तिष्क के कारण ही मानव नये-नये आविष्कार करता है और उन्हें मानव जाति के अनुभवों में सजोता है। संस्कृति का धनी होने के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है। मनुष्य अति-प्राणी (Super Organic) कहलाने का भी अधिकारी है।

2. संस्कृति सीखी जाती है :—

संस्कृति मनुष्य को अपने माता-पिता द्वारा इस प्रकार वंशानुक्रमण में प्राप्त नहीं होती, जिस प्रकार से शरीर रचना प्राप्त होती है। संस्कृति मानव के सीखे हुए व्यवहार प्रतिमानों का योग है। मानव संस्कृति को धीरे-धीरे समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखता

है। परन्तु सभी प्रकार के सीखे हुए व्यवहार संस्कृति के अंग नहीं है जैसे व्यक्तिगत व्यवहार। जो व्यवहार सम्पूर्ण या अधिकतर समूह, समुदाय या समाज के होते है उनसे ही संस्कृति निर्मित होती है।

3. संस्कृति हस्तांतरित की जाती है :— संस्कृति चूँकि सीखी जा सकती है इसीलिए नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के द्वारा संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करती है। इस प्रकार एक समूह से दूसरे समूह को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को संस्कृति हस्तांतरित की जाती है। मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ होने में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा के कारण ही वह अपने ज्ञान को दूसरे लोगों तक पहुँचाता है। अतः इस प्रक्रिया द्वारा मानव ज्ञान एवं संस्कृति का कोष दिनों-दिन बढ़ता जाता है और वह संचयी (cumulative) होती जाती है।

4. प्रत्येक समाज की एक विशिष्ट संस्कृति होती है :— एक समाज की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ दूसरे समाज से भिन्न होती है। अतः प्रत्येक समाज में अपनी एक विशिष्ट संस्कृति पायी जाती है। समाज अपनी आवश्यकता के संबंध में अनेक अविष्कार करता है। अविष्कारों का योग संस्कृति को एक नया रूप प्रदान करता है। प्रत्येक समाज की आवश्यकताएँ भिन्न होती है जो सांस्कृतिक भिन्नताओं को जन्म देती है।

5. संस्कृति में सामाजिक गुण निहित होता है :— संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष की देन नहीं होती वरन् सम्पूर्ण समाज की देन है। इसका विकास समाज के कारण ही हुआ है। कोई भी संस्कृति पाँच, दस या सौ व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व नहीं करती वरन् समूह का या समाज के अधिकांश लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। प्रथाएँ, जनरीतियाँ, भाषा, धर्म, परम्परा आदि संस्कृति के अंग है जो समाज की जीवन-विधि का निर्माण

करते हैं।

6. संस्कृति मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती है :— संस्कृति की यह विशेषता है कि यह मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। मानव की अनेक शारीरिक, सामाजिक और मानसिक आवश्यकताएँ होती है। उनकी पूर्ति के लिए ही उसने संस्कृति का विकास किया है। प्रकार्यवादी मैलीनोवस्की एवं रेडक्लिफ ब्राउन आदि की मान्यता है कि संस्कृति का कोई भी तत्व बेकार नहीं होता वरन् मानव की किसी-न-किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही है।

7. संस्कृति में अनुकूलन की क्षमता होती है :— संस्कृति में समय, स्थान, समूह एवं परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढालने की क्षमता होती है। परिवर्तनशीलता संस्कृति का गुण है। पहाड़ी भागों, मैदानों, रेगिस्तानों आदि प्रदेशों में निवास करने वाले लोगों की संस्कृतियों में प्रयाप्त अंतर होता है। आगबर्न ने सांस्कृतिक विलम्बना (Cultural Lag) का सिद्धान्त संस्कृति की परिवर्तनशीलता या अनुकूलनशीलता को स्पष्ट करने के संदर्भ में ही दिया है।

8. संस्कृति में संतुलन एवं संगठन होता है :— संस्कृति का निर्माण विभिन्न इकाइयों से मिलकर होता है। संस्कृति इकाइयाँ जिसे हम संस्कृति तत्व एवं संस्कृति संकुल कहते हैं। वे परस्पर एक दुसरे से बँधे हुए हैं। ये सभी इकाइयाँ संगठित रूप से मिलकर ही सम्पूर्ण संस्कृति की व्यवस्था को बनाये रखती है।

9. संस्कृति मानव व्यक्तित्व के निर्माण में मौलिक होती है :— एक मनुष्य का पालन-पोषण किसी सांस्कृतिक पर्यावरण में ही होता है, जन्म के बाद बच्चा अपनी संस्कृति को सीखकर उसे आत्मसात् करता है। एक संस्कृति में पले हुए व्यक्ति के व्यक्तित्व से भिन्न होता है इसका कारण यह है कि संस्कृति में प्रचलित रीति-रिवाजों, धर्म, दर्शन,

कला, विज्ञान, प्रथाओं एवं व्यवहारों की छाप व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ती है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में पला हुआ व्यक्ति जापानी संस्कृ में पले हुए व्यक्ति से भिन्न होता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि संस्कृति के अंतर्गत विचार तथा व्यवहार के सभी प्रकार आ सकते हैं जो संस्थानात्मक अन्तः क्रिया के द्वारा व्यक्तियों को प्राप्त होते हैं अर्थात मानव बोलने से हाव-भाव से तथा उदाहरण से इन्हें प्राप्त करता है, न कि वंशानुक्रमण द्वारा। अतः अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनुष्य ने जिन भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं का निर्माण अथवा विकास किया है वे सब संस्कृति के अंतर्गत आती हैं।